RNI No.: RAJBIL/2013/54153

ISSN : 2322-0074

अलख दृष्टि

ALAKH DRISHTI

(भाषा, दर्शन, साहित्य, संस्कृति एवं मानविकी की संवाहिका त्रैमासिक शोध पत्रिका)

वर्ष-5 • अंक-02 • त्रौमासिक • अप्रेल-जून, 2017

A Peer Reviewed Research Quarterly

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
01.	प्रकाश स्वरूपा गायत्री	प्रो. हरिशंकर पाण्डेय	06-15
02.	समय और सामायिक	डॉ. दिलीप धींग	16-20
03.	"धम्मपद में निरूपित आचार-सूत्र"	डॉ. सूरज राव	21-25
04.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्य - शिक्षा की प्रासंगिकता	जय प्रकाश सिंह	26-30
05.	जैन अर्द्धमागधी आगमों में अलंकार	समणी संगीत प्रज्ञा	31-34
06.	कविवर भूधरदासजी कृत बारह- भावनाओं का मनोरम चित्रण	ममता जैन	35-38
07.	आचार्य गणेशमुनि के प्रवचनों में कुसंस्कार निवारण	डॉ. विकास चौधरी	39-41
08.	श्रीमद्भगवतगीता में योग साधना एवं पथ्य-अपथ्य	मुकेश शर्मा	42-44
09.	**E-Learning and Higher Education**	**Mrs. Vinod Siyag**	45-49
10.	**Integrating Technology into the Curriculum: Teaching the Teachers**	**Vineet Kaul**	50-57
	पुस्तक समीक्षा	प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी	58

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्य - शिक्षा की प्रासंगिकता

जय प्रकाश सिंह

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह जिस समाज में रहता है। उस समाज के रीति-रिवाज, रहन-सहन, संस्कृति, मूल्यों आदि को सीखता है। मनुष्य अपने "अनुभव एवं ज्ञान" को समय विशेष के कालचक्र की परिस्थितियों के अनुसार सुधार या परिशोधन करता रहता है। मनुष्य अपने इसी पूर्व के अनुभव एवं ज्ञान के आधार पर अपने वर्तमान एवं भविष्य को श्रेष्ठ बनाता है। इसलिए यह ज्यादा आवश्यक हो जाता है कि किसी भी विषय के ऐतिहासिक पक्ष को जाना जाये। इस ऐतिहासिक पक्ष से ही हमें उस काल, समय की वास्तविकता को समझा या दिग्दर्शन किया जा सकता है अर्थात् उस समय के क्रियाकलापों, उपलब्धियों, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध विज्ञान का अध्ययन हो सकेगा।

भारतीय शिक्षा के इतिहास को देखते हैं तो शिक्षा में मूल्यों के विकास पर काफी प्रकाश पड़ता है। **प्राचीनकाल** में शिक्षा की शुरूआत पांच वर्षों के बाद से एक संस्कार (उपनयन एवं प्रव्रज्या) से होती थी। इस संस्कार के बाद ही उसे गुरुकुल या आश्रम के आदर्श नियम संयम में रहकर बच्चों की शिक्षा संचालित होती थी। इस काल में शिक्षा का आधार 'वेद' होने के कारण वैदिक मूल्यों, नियमों की शिक्षा दी जाती थी। जैसे-व्यक्तित्व एवं चारित्रिक निर्माण, नियमों का पालन करना, आध्यात्मिक एवं नैतिक गुणों का विकास आदि। इसके बाद बौद्ध काल में शिक्षा का आधार "बौद्धिक साहित्य" होने के कारण व्यवहार में आचरण पर विशेष जोर दिया जाता था। इस समय प्राथमिक एवं उच्च स्तर दोनों स्तरों पर शिक्षा की व्यवस्था थी जिसमें धार्मिक मूल्य ये थे जैसे-सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, जीव मात्र से प्रेम, विद्यार्थियों के लिए दस आदर्श नियमों का पालन आदि। वर्तमान शिक्षा की समस्याओं को हल करने में उस काल की कई बातें आज भी प्रासंगिक एवं उपयोगी लगती हैं। जैसे-आदर्शवादिता, अनुशासन, गुरु-शिष्य सम्बन्ध, शिक्षा के लिए शांत माहौल, छात्र एवं अध्यापकों का सरल जीवन, शैक्षणिक संस्थाओं में प्रजातांत्रिक संगठन, शांति एवं अहिंसा का अनुसरण आदि।

मध्यकाल में शिक्षा का मूल आधार "इस्लाम धर्म" र आधारित था जिसका मुख्य स्रोत कुरान था। इस काल में भी शिक्षा के दो स्तर प्राथमिक स्तर (मक्तबा) और उच्च शिक्षा (मदरसा) में प्रदान किया जाता था जिसमें धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ चरित्र निर्माण, नैतिकता पर बल, भौतिक ऐश्वर्य की प्राप्ति पर विशेष जोर दिया जाता था। इस काल की कई बातें वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए मूल्यवान एवं उपयोगी हैं। जैसे-व्यावहारिक शिक्षा, अध्यापकों एवं छात्रों के बीच व्यक्तिगत सम्पर्क, धार्मिक एवं लौकिक शिक्षा का समन्वय, कक्षा-नायक की प्रणाली, निःशुल्क शिक्षा आदि।

आधुनिक काल को दो भागों में बांट कर शिक्षा के स्वरूप को देखा जा सकता है। **प्रथम ब्रिटिश कालीन (स्वतंत्रता से पूर्व)**-इस काल में शिक्षा की नई प्रणाली का विकास हुआ। जैसे प्राइमरी, सेकेण्डरी, कॉलेज और यूनिवर्सिटी आदि। पर इनका उद्देश्य सर्वांगीण विकास के स्थान पर अपने स्वार्थ भरे उद्देश्यों को साधना था। जैसे-अंग्रेजी एवं पाश्चात्य संस्कृति के विकास के साथ-साथ अपने शासन को चलाने हेतु अंग्रेजी सोच वाले भारतीयों को तैयार करना था। अर्थात् इस काल में मूल्यों का स्तर नगण्य हो चुका था।

द्वितीय स्वतंत्रता के बाद (1947 के बाद)-इस समय शिक्षा प्रणाली के नये पाठ्यक्रमों में भारतीय संस्कृति के विकास को ध्यान में रखते हुए नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ने के लिए करुणारूपी कहानी के साथ-साथ मार्मिक कविताएं पढ़ायी जाती थी। जैसे रवीन्द्रनाथ टैगोर, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचन्द, निराला, रामधारी सिंह दिनकर आदि। इन कविताओं से एक तरफ नैतिकता, आदर्श का पाठ पढ़ाया जाता था जो आगे चलकर वे देश प्रेम एवं सांस्कृतिक, नैतिक मूल्यों का बढ़ावा देखने को मिलता था लेकिन 1970 के दशक के बाद जहां धीरे-धीरे नयेपन, आधुनिकता और प्रगति के नाम पर "शिक्षा-प्रणाली" में बदलाव पश्चिमी दुनिया से सम्पर्क बढ़ने से शुरू हुआ। कुछ वर्षों बाद ऐसी परिस्थितियां बनने लगी और ये बदलाव खटकने लगा। इसी का परिणाम था कि राजीव गांधी की सरकार द्वारा शिक्षा की विभिन्न चुनौतियों के आधार पर नई शिक्षा प्रणाली (10+2+3), कम्प्यूटर शिक्षा के साथ-साथ मूल्य आधारित शिक्षा पर जोर दिया गया था। भारतीय सरकार की राजनीतिक उथल-पुथल और दुनिया भर के तौर तरीकों को बिना जाने, समझे और परखे अपने पाठ्यक्रम में नवीनता के नाम पर परिवर्तन किया जा रहा है जिसका गंभीर परिणाम देखने को मिल रहा है। शिक्षा पर गठित आयोगों, समितियों एवं कार्यदलों ने स्वीकार किया कि समाज को मूल्यों से समृद्ध करने एवं समाज का नैतिक विकास करने हेतु मूल्य शिक्षा आवश्यक है।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास, शिक्षा-प्रणाली की संरचना, औद्योगिक सभ्यता के उदय एवं उपभोक्तावादी संस्कृति के विकास से मानव के जीवन दर्शन, जीवन शैली एवं दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ है। इस परिवर्तन के फलस्वरूप व्यक्ति में लालच, संकीर्णता, स्वार्थपरता, सम्वेदनहीनता एवं विलासिता की वृद्धि हुई जिससे व्यक्ति और समाज का पतन शुरू हुआ। चूंकि शिक्षा समाज का एक अंग होने के कारण शिक्षा में भी मूल्यों का ह्रास होना स्वाभाविक दिखलाई पड़ता है। जैसे- अनुशासनहीनता, कर्त्तव्यविमुखता, उत्तरदायित्व का अभाव, श्रम से विमखुता, समानता, निराशावाद आदि विकृतियां शिक्षा जगत् के सामान्य लक्षण के रूप में देखने को मिलते हैं। सर्वत्र मूल्यों के ह्रास ने विश्व के समक्ष अनेक नवीन समस्याओं को उत्पन्न कर दिया है।

वर्तमान समय की स्थिति को समझने के लिए इस समय में चल रहे मीडिया, न्यूज पेपर, सोशल साइट को देखने से हमारे सामने मूल्यों में हो रही गिरावट दिखाई पड़ती है। उदाहरण स्वरूप समाचार पत्र को ही ले लें,

1. नौंवी की छात्रा का टायलेट में प्रसव, 02 दिसम्बर, 2012, राजस्थान पत्रिका।
2. स्कूल का फरमान 1 मीटर की दूरी बनाकर रखे छात्र और छात्राएं, 27 सितम्बर, 2015, राजस्थान पत्रिका।
3. स्कूल में शिक्षकों की कमी होने पर शिक्षक लगाने के लिए प्रदर्शन, 04 अक्टूबर, 2015, राजस्थान पत्रिका, चूरू।
4. जहां गाय-भैंस बंधी वहीं परीक्षा दे रहे बच्चे, 19 दिसम्बर, 2015, राजस्थान पत्रिका, चूरू।

5. बच्चे को बैठने की जगह नहीं मिली, शिक्षिका ने खुद बनवा दिया भवन, 13 जनवरी, 2016, राजस्थान पत्रिका।
6. शिक्षक ने छात्रा का सर फोड़ा, 13 जनवरी, 2016, राजस्थान पत्रिका, सीकर।
7. फर्जी टीसी देने के आरोपी को जेल, 16 जनवरी, 2016, राजस्थान पत्रिका।
8. छात्रा से शिक्षक ने किया दुष्कर्म, 03 फरवरी, 2016, राजस्थान पत्रिका।
9. दुष्कर्म के आरोपी शिक्षक को निलम्बित गिरफ्तारी के लिए प्रदर्शन, 04 फरवरी, 2016, राजस्थान पत्रिका, चूरू।
10. शिक्षा विभाग का लिपिक रिश्वत लेते गिरफ्तार, 20 फरवरी, 2016, राजस्थान पत्रिका।
11. स्कूल में दो अध्यापक, उसमें से एक छुट्टी पर, 13 सितम्बर, 2016 राजस्थान पत्रिका।

उपरोक्त घटनाओं के उल्लेख के माध्यम से यह प्रमाणित होता है कि दैनिक समाचार पत्रों में शिक्षा एवं शिक्षा से जुड़े हुए लोगों में मूल्यों की गिरावट होती हुई दिख रही है। यह सिर्फ शिक्षा के क्षेत्र का ही हाल नहीं है बल्कि प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यों की गिरावट देखने को मिल रही है।

जातिवाद, सम्प्रदायवाद, भाषावाद, प्रान्तवाद, भ्रष्टाचार, हवाला शेयर घोटाला, हिंसा, क्षेत्रीय संकीर्णता, अलगाववाद, धर्मान्ध कट्टरतावादियों द्वारा फैलाया जा रहा धार्मिक आतंकवाद हो या सांस्कृतिक संकट, राष्ट्रीय जीवन के लिए विष का काम कर रही है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि खुली अर्थव्यवस्था, नये बाजार, उदारीकरण, भूमण्डलीकरण, उपभोग संस्कृति, उत्पीड़न, रंगभेद, लैंगिक पक्षपात की कोई संस्कृति नहीं होती। दो विश्वयुद्धों एवं उपनिवेशवाद ने मनुष्यों को उपभोक्ता एवं विज्ञापन संस्कृति की सीख हासिल की है। साथ ही इस तकनीकी युग में विज्ञापन संस्कृति इतनी बढ़ चुकी है कि इससे वर्तमान में जीवन मूल्यों की सुरक्षा करना चिन्तनीय विषय बन चुका है। नैतिक मूल्य लोकतंत्र की केन्द्रीय धुरी है। वास्तविकता यह है कि मूल्य कभी बिखरते नहीं। बिखरती है हमारी चेतना और टूटते हैं हमारे विश्वास, तब उत्पन्न होती हैं कुण्ठाएं और हम दूर होते जाते हैं अपने अन्तर्निहित विश्वासों से। जब हमारी चेतना भ्रमित होती है तब राजनीतिक सोच का अवमूल्यन होता है और भ्रष्ट नीति से लोकतंत्र भी घायल होता है। ज्यों-ज्यों समाज में परिवर्तन होता है त्यों-त्यों मानव सम्बन्ध भी बदलते है। उनकी चेतना भी बदलती है और ठीक इसी क्रम में साहित्य, धर्म और दर्शन भी कुछ परिवर्तित होते हैं। हमारी रुचि, नैतिकता और दृष्टि में भी परिवर्तन होता है। फिर यह भी तो सच है कि समय के परिवर्तन के साथ-साथ जीवन मूल्यों में भी परिवर्तन होता रहता है। यहीं पर एक सवाल उत्पन्न होता है कि आज नैतिकता एवं मूल्यों के प्रति कम आस्था पैदा हो रही है। आज हम जिस समाज में सांस ले रहे हैं उसमें हमारी भाषा, आचार-विचार एवं सद्व्यवहार नये कपड़े की तरह सिकुड़ रहे हैं। वर्तमान परिदृश्य में हमें बाजार की दुकानों, चौराहे के होटलों, फेसबुक, टी.वी. सिरियलों, अखबारों एवं सरफिरों की भाषा में ऐसी भाषा सुनाई दे रही है जिससे हमारी नैतिकता निरन्तर गिरती जा रही है। बाजार में प्रदर्शन की इस भाषा एवं व्यवहार ने भयंकर हमला हमारे नैतिक मूल्यों एवं नैतिकता पर किया है।

हम लोग 71वीं स्वाधीनता दिवस मना चुके हैं जिसमें नेताओं के थोथे वादे, कोरे आश्वासन, चरम व्यक्तिवाद से भरी मानसिकता और भौतिक सुख की उपभोगवादी नीति के अलावा उनके पास कोई बड़ी विशेष उपलब्धि नहीं है। उदाहरण स्वरूप 'कर्मवीर सैनिकों' ने जो अपना सर्वस्व त्याग किया है। यहां तक कि अपने प्राणों की आहूति भी दी हैं इस पर नेता स्वार्थपूर्ण एवं दिखावे की राजनीति से ओतप्रोत होकर सिर्फ उनके परिवार के लोगों को 'मेडल' से तो सम्मानित कर देते हैं पर बाद में उनके परिवार की कोई सुध लेने वाला नहीं होता। उनकी स्थिति दयनीय होती जाती है। आज उनकी सबसे बड़ी पीड़ा यह है कि राजनीतिक पटल पर व्यापक स्तर पर भ्रष्टाचार का होना। आज के बदलते परिवेश में अपनी मानसिकता बदल चुके हैं, मूल उद्देश्यों से भटकाव हो गया है। आवश्यकता है कि हम सभी लोग अपने कार्य एवं व्यवहार में मूल स्वरूप से मूल्यपरक हों। यदि हम इसमें जितना निहित

होंगे उतना ही मूल्यों की पुनर्स्थापना हो सकेगी और हमारा वर्तमान परिवेश के साथ-साथ भविष्य भी और अच्छा होगा।

वैज्ञानिक और तकनीकी विकास, नवीन प्रौद्योगिकी ने हमारी जीवनशैली को बदला है। जनसंख्या वृद्धि, विवेकशीलता में वृद्धि, समान जागरूकता में वृद्धि के साथ-साथ आवश्यकता आविष्कार की जननी, आर्थिक उदारीकरण, पाश्चात्य विचारधारा का प्रभाव भी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ज्यादा हुआ है। मूल्यों की रक्षा की चिन्ता भारतीय परिप्रेक्ष्य में अधिक इसलिए है कि यह राष्ट्र अनेकता में एकता की धारणा को धारण करने वाला है। यहां की प्राचीन साहित्यकार की रचनाएं, संवेदनशीलता, भावात्मक रूप से मौलिक कहानियों से शाश्वत मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने वाली रही है। यहां के शिक्षाशास्त्री एवं दार्शनिक सत्य, अहिंसा, चरित्र निर्माण एवं सर्वांगीण विकास पर बल देने वाले रहे हैं। साथ ही साथ प्राचीन ऋषि-मुनियों एवं धर्मगुरुओं, गुरु-शिष्य की परम्परा द्वारा सद्गुणों के विकास का मार्गदर्शन देने वाला रहा है। इसमें अतिश्योक्ति नहीं है कि प्राचीन समय में यह विश्वगुरु के नाम से जाना जाता था।

शिक्षा नैतिक उन्नयन का माध्यम रही है। कालान्तर में यह रोजगार से जुड़ गयी। अब 'बाजार' शिक्षा की दशा और दिशा तय करता प्रतीत होता है। देश में स्कूली शिक्षा 1 से 8 तक तो सिर्फ परीक्षा उत्तीर्ण करने की है और उच्च शिक्षा केवल डिग्री प्रदान करने की मशीन बनकर रह गई है। इस समय मध्यम वर्ग भी अपने बच्चों को बेहतर कल के लिए कुछ अलग सोचने लगे हैं। यहां तक कि उन्हें उच्च शिक्षा को लेकर विदेश भेजना ज्यादा बेहतर समझते हैं।

विभिन्न प्रकार के अपराधों ने प्राचीन भारतीय दर्शन की मूल परम्परा की नींव को हिला दिया। निजीकरण, वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं नयेपन के माध्यम से समाज में धन एवं उपभोग नीति बढ़ गयी है। अंततः मैं कहना चाहूंगा कि हमें शाश्वत नीति-नियमों की सत्ता के साथ-साथ मूल्यों को शिक्षा में आत्मबल के साथ अंगीकार करना होगा। साथ ही साथ शिक्षा के पाठ्यक्रमों के माध्यम से शैक्षिक एवं दार्शनिक चिन्तकों के साहित्य अध्ययन, जीवन चरित्र द्वारा आज के मानव के हृदय में भावात्मक संवेदना पैदा कर दिमाग में नई सोच पुनः विकसित करनी होगी। इसके लिए सिर्फ सैद्धान्तिक रूप से ही नहीं बल्कि व्यावहारिक पक्ष पर ज्यादा ध्यान देना होगा। अतः मूल्यपरक शिक्षा से हमारा तात्पर्य उस 'शिक्षण' से है जिसमें हमारी नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य समाहित हों, प्रत्येक विषय को मूल्यपरक बनाकर उसके माध्यम से विविध मूल्यों को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में समाहित करना ताकि विद्यार्थियों का संतुलित एवं सर्वतोमुखी विकास हो सके।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि मूल्यों को दरकिनार करने वाली शिक्षा प्रणाली सिर्फ सामाजिक विकृतियों को जन्म दे रही है। जिसका हल कानून के डण्डे से संभव नहीं। समाज में जड़ जमा रही इस प्रवृत्ति को बदलना होगा, जो शिक्षा द्वारा ही संभव है। मूल्यों के विकास में शिक्षा की सकारात्मक भूमिका होती है इसी कारण वर्तमान विश्व में मूल्य शिक्षा पर बल दिया जा रहा है। शिक्षा जगत् से जुड़े अभिभावक, अध्यापकों, नीति निर्माताओं एवं समाज सुधारकों ने मूल्य की पुनर्स्थापना हेतु शिक्षा में मूल्य शिक्षा की संकल्पना को प्रभावी रूप से माना है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. **भटनागर, सुरेश, कुमार, संजय (2005)** "भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास", आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ. 532
2. **लोढ़ा, महावीर मल,** 'नैतिक शिक्षा : विविध आयाम', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007, पृ. 297
3. **पाठक, पी.डी. (2004)** "भारतीय शिक्षा और उसकी समस्या", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. 732
4. **पाठक, रघुनाथ प्रसाद (1988),** "नैतिक जीवन", सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली-7, पृ. 63
5. **रूहेला, सत्यपाल (2009)** "मूल्य शिक्षा : क्या, क्यों, कैसे?", अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ. 356
6. **रूहेला, सत्यपाल (2010)** "शिक्षा के दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय आधार", अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ. 367
7. **रूहेला, एस.पी.:** "विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा", आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर, (2006), पृ. 592

8. **रामगढ़िया, निर्मल सिंह (2006)** "मूल्यपरक शिक्षा" गुरुजी बुक कम्पनी, जयपुर
9. **नेगी, सुरेन्द्र सिंह (2000),** "नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता", आदित्य पब्लिशर्स, बीना-13, मध्य प्रदेश, पृ. 149
10. पाराशर, शैलेन्द्र (2010), "उच्च शिक्षा में शिक्षकों के बदलते मूल्य, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, पृ. 226

पत्रिकाएं

1. **व्यास, ओम बाबू,** "बालक के सर्वांगीण विकास में मूल्य शिक्षा का महत्त्व"शिविरा पत्रिका, अक्टूबर 2014, अंक 4, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर, पृ. 36-37
2. **पंवार, सत्यनारायण,** "सेवारत अध्यापकों द्वारा नैतिक शिक्षा"शिविरा पत्रिका, नवम्बर 2014, अंक 5, माध यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर, पृ. 35-36
3. **सिंह, पी.डी.,** "मूल्य आधारित हो आचरण"शिविरा पत्रिका, दिसम्बर 2014, अंक 6, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर, पृ. 17-18

समन्वयक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूं-341306 (राजस्थान)

◆ ◆ ◆

महत्त्वपूर्ण सूचना

अलख दृष्टि (त्रैमासिक) शोध-पत्रिका के पाठकों, ग्राहकों व शुभचिन्तकों को सूचित किया जाता है कि वे अब भारत की ओरियण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स की किसी भी शाखा में खाता नं. 10271131001021 तथा IFSC Code No. ORBC 0101027 में शुल्क, अनुदान या विज्ञापन की राशि जमा कर सकते हैं। साथ ही हमारे कार्यालय को सूचित करें कि अमुक राशि किस ब्रांच में जमा की गई है। इसके अतिरिक्त राशि या शुल्क मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा भी भेज सकते हैं और आप ई-मेल से शोध-लेख भी भेज सकते हैं। पत्रिका का ई-मेल dr.aptripathi@rediffmail.com है। कृपया सुविधा का पूरा लाभ उठाएँ।

–व्यवस्थापक